Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी कविता : सृजन, संवेदना एवं भविष्य

प्रा. डॉ. संजय गणपती भालेराव (सहा. प्राध्यापक)*
हिन्दी विभाग , शरदचंद्र महाविद्यालय, नायगांव (बा.) जि.नांदेड

शोध सार

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) इक्कीसवीं सदी की सबसे प्रभावशाली तकनीकी उपलब्धियों में से एक है। इसका प्रभाव केवल विज्ञान, उद्योग और प्रशासन तक सीमित न रहकर साहित्य और कला जैसे सृजनात्मक क्षेत्रों तक विस्तृत हो चुका है। प्रस्तुत शोध-पत्र में हिंदी कविता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अंतर्संबंधों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता किस प्रकार कविता-निर्माण की प्रक्रिया को प्रभावित कर रही है तथा इससे मानवीय संवेदना, रचनात्मकता और साहित्यिक मूल्यों पर क्या प्रभाव पड़ता है। शोध में ऐतिहासिक, वैचारिक और समकालीन संदर्भों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी कविता के लिए न तो पूर्णतः खतरा है और न ही पूर्णतः विकल्प, बल्कि एक सहायक उपकरण के रूप में नई संभावनाएँ प्रस्तुत करती है।

बीज शब्द: *कृत्रिम बुद्धिमत्ता, हिंदी कविता, रचनात्मकता, साहित्य और तकनीक, डिजिटल साहित्य*

Received: 11/12/2025
Accepted: 24/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
प्रा. डॉ. संजय गणपती भालेराव
Email: sanjayganpatibhalerao1206@gmail.com

प्रस्तावना

मानव सभ्यता के इतिहास में भाषा और कविता केवल अभिव्यक्ति के साधन नहीं रहे, बल्कि वे समाज की सामूहिक चेतना, संवेदना और कल्पनाशीलता का आईना भी रहे हैं। जब-जब तकनीक ने नए रूप धारण किए, तब-तब साहित्य ने भी स्वयं को बदला, विस्तार दिया और नए प्रश्नों से टकराया। मुद्रण कला से लेकर रेडियो, टेलीविजन और इंटरनेट तक—हर तकनीकी परिवर्तन ने साहित्यिक सृजन को नई दिशा दी। आज इक्कीसवीं सदी के डिजिटल युग में 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' (Artificial Intelligence) एक ऐसी तकनीक के रूप में उभरी है, जिसने न केवल मानव जीवन की कार्यप्रणाली बदली है, बल्कि रचनात्मक क्षेत्रों, विशेषकर कविता, को भी गहराई से प्रभावित किया है।

हिंदी कविता, जो सदियों से लोकजीवन, सामाजिक संघर्ष, आध्यात्मिक खोज और मानवीय संवेदना की वाहक रही है, आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ एक नए संवाद में प्रवेश कर चुकी है। यह संवाद केवल तकनीक बनाम कला का नहीं है, बल्कि सृजन बनाम संवेदना, मशीन बनाम मनुष्य और भविष्य बनाम परंपरा का भी है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता : अवधारणा और विकास

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अर्थ है—ऐसी मशीन या प्रणाली का निर्माण, जो मानव की तरह सोच सके, निर्णय ले सके और अनुभवों से सीख सके। इसका प्रारंभिक विकास बीसवीं सदी के मध्य में हुआ, जब वैज्ञानिकों ने यह प्रश्न उठाया कि क्या मशीनें भी सोच सकती हैं। धीरे-धीरे कंप्यूटर विज्ञान, गणित, तंत्रिका विज्ञान और भाषाविज्ञान के सहयोग से एआई का क्षेत्र विकसित होता गया।

प्रारंभ में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग गणनाओं, डेटा विश्लेषण और तार्किक समस्याओं तक सीमित था, किंतु मशीन लर्निंग, डीपलर्निंग और न्यूरल नेटवर्क जैसी तकनीकों के आगमन के साथ एआई ने भाषा, चित्र, संगीत और साहित्य जैसे रचनात्मक क्षेत्रों में भी प्रवेश किया। आज एआई केवल अनुवाद या वाक्य-निर्माण ही नहीं करता, बल्कि कविता, कहानी और निबंध जैसी विधाओं में भी अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है।

साहित्य और तकनीक का ऐतिहासिक संबंध

साहित्य और तकनीक का संबंध सदैव द्वंद्वात्मक रहा है। जब छापाखाने का आविष्कार हुआ, तब यह आशंका जताई गई कि मौखिक परंपरा नष्ट हो जाएगी। रेडियो और टेलीविजन के आगमन पर यह भय व्यक्त किया गया कि पुस्तक-पाठन कम हो जाएगा। इंटरनेट के दौर में कहा गया कि साहित्य सतही हो जाएगा। किंतु इतिहास गवाह है कि हर नई

तकनीक ने साहित्य को नया मंच, नया पाठक और नई संभावनाएँ दी हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता भी इसी परंपरा का अगला चरण है। अंतर यह है कि यहाँ तकनीक केवल माध्यम नहीं, बल्कि सृजन में सहभागी बन रही है। यही कारण है कि एआई और कविता का संबंध अधिक जटिल, चुनौतीपूर्ण और विचारोत्तेजक बन जाता है।

कविता : संवेदना और सृजन का क्षेत्र

कविता को सामान्यतः मानवीय संवेदना की सर्वोच्च अभिव्यक्ति माना जाता है। दुख, प्रेम, करुणा, विद्रोह, आशा और निराशा—ये सभी भाव मनुष्य के जीवन-अनुभवों से उपजते हैं। प्रश्न यह उठता है कि क्या कोई मशीन, जिसके पास न तो जीवनानुभव है और न ही चेतना, कविता रच सकती है?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता कविता को शब्दों, संरचनाओं और पैटर्न के रूप में समझती है। वह हजारों-लाखों कविताओं का अध्ययन कर यह सीख लेती है कि कौन-से शब्द किस संदर्भ में प्रयुक्त होते हैं, छंद और लय कैसे बनती है, और रूपक कैसे गढ़े जाते हैं। इस आधार पर वह नई कविताएँ रच सकती है। किंतु क्या यह सृजन है या केवल अनुकरण? यही मूल प्रश्न है।

एआई द्वारा कविता-निर्माण की प्रक्रिया

एआई कविता-निर्माण की प्रक्रिया मुख्यतः डेटा और एल्गोरिद्म पर आधारित होती है। हिंदी कविता के विशाल भंडार—भक्तिकाल से लेकर आधुनिक और समकालीन कविता तक—को मशीन के प्रशिक्षण हेतु प्रयोग किया जाता है। इसके बाद मशीन भाषा के पैटर्न, बिंबों, प्रतीकों और भाव-व्यंजना को पहचानने लगती है।

जब किसी विषय या संकेत (prompt) के आधार पर कविता लिखने को कहा जाता है, तो एआई उपलब्ध डेटा के आधार पर संभावित शब्द-संयोजन प्रस्तुत करता है। कई बार ये कविताएँ प्रभावशाली लगती हैं, क्योंकि उनमें भाषा की प्रवाहशीलता और बिंबात्मकता होती है। किंतु उनमें आत्मानुभूति का अभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

हिंदी कविता और एआई : समकालीन प्रयोग

हिंदी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा कविता-लेखन अभी प्रारंभिक अवस्था में है, किंतु इसके प्रयोग तेजी से बढ़ रहे हैं। कुछ डिजिटल प्लेटफॉर्म और शोध-परियोजनाएँ हिंदी में एआई कविताओं के निर्माण पर कार्य कर रही हैं। ये कविताएँ प्रेम, प्रकृति, सामाजिक प्रश्नों और दार्शनिक विषयों को छूने का प्रयास करती हैं।

इन प्रयोगों का महत्व इस बात में है कि वे हिंदी भाषा के डिजिटल भविष्य को मजबूत बनाते हैं। अब तक तकनीकी क्षेत्र में अंग्रेज़ी का वर्चस्व रहा है, किंतु हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में एआई के प्रयोग से भाषाई विविधता को नई ऊर्जा मिल रही है।

रचनात्मकता का प्रश्न

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और कविता के संदर्भ में सबसे बड़ा प्रश्न रचनात्मकता का है। क्या रचनात्मकता केवल नए शब्द-संयोजन करने का नाम है, या वह जीवनानुभव, संवेदना और आत्मचेतना से जुड़ी होती है—यह प्रश्न समकालीन आलोचना का केंद्र है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और कविता के संदर्भ में सबसे बड़ा प्रश्न रचनात्मकता का है। क्या रचनात्मकता केवल नए शब्द-संयोजन करने का नाम है, या वह जीवनानुभव, संवेदना और आत्मचेतना से जुड़ी होती है?

मानव कवि अपने व्यक्तिगत और सामाजिक अनुभवों से कविता रचता है। उसकी कविता में समय, समाज और आत्मसंघर्ष की छाप होती है। एआई इन अनुभवों से वंचित है। वह केवल उपलब्ध डेटा के आधार पर संभावनाएँ प्रस्तुत करती है। इसलिए एआई की कविता में 'अनुभूति की सच्चाई' नहीं, बल्कि 'भाषिक कुशलता' अधिक दिखाई देती है।

पाठक की भूमिका

एआई द्वारा रचित कविता का मूल्यांकन अंततः पाठक ही करता है। यदि पाठक को कविता में अर्थ, सौंदर्य और संवेदना का अनुभव होता है, तो वह उसे स्वीकार करता है—चाहे उसका रचयिता मनुष्य हो या मशीन। इस दृष्टि से देखा जाए तो कविता की प्रासंगिकता रचयिता से अधिक पाठक के अनुभव पर निर्भर करती है।

हालाँकि, यह भी सत्य है कि जब पाठक को ज्ञात होता है कि कविता मशीन द्वारा लिखी गई है, तो वह उसे अलग दृष्टि से पढ़ता है। यह मनोवैज्ञानिक अंतर एआई कविता की स्वीकृति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

नैतिक और साहित्यिक चिंताएँ

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साहित्यिक प्रयोग कई नैतिक प्रश्न भी उठाते हैं। यदि मशीन कविता लिखती है, तो उसका श्रेय किसे दिया जाए—प्रोग्रामर को, डेटा-संग्रहकर्ता को या स्वयं मशीन को? क्या एआई द्वारा लिखी कविता को साहित्यिक पुरस्कार मिलना चाहिए? क्या इससे मानव कवियों के अवसर कम होंगे?

इसके अतिरिक्त, कॉपीराइट और मौलिकता का प्रश्न भी महत्वपूर्ण है। एआई जिन कविताओं के आधार पर सीखती है, वे किसी न किसी मानव कवि की रचनाएँ होती हैं। ऐसे में यह आशंका रहती है कि एआई का सृजन कहीं न कहीं पूर्ववर्ती रचनाओं की छाया मात्र न हो।

हिंदी साहित्य का भविष्य और एआई

कृत्रिम बुद्धिमत्ता को हिंदी कविता के लिए केवल खतरे के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यदि इसका प्रयोग सहायक उपकरण के रूप में किया जाए, तो यह सृजन की नई संभावनाएँ खोल सकती है। कवि एआई की सहायता से भाषा-प्रयोग, छंद-विन्यास और संपादन में नई दिशा पा सकते हैं।

शोध और आलोचना के क्षेत्र में भी एआई उपयोगी सिद्ध हो सकती है। वह विशाल साहित्यिक सामग्री का विश्लेषण कर प्रवृत्तियों, शैलियों और विषयों की पहचान कर सकती है, जिससे साहित्यिक अध्ययन अधिक व्यापक और गहन बन सकता है।

मनुष्य और मशीन : सह-अस्तित्व की संभावना

अंततः प्रश्न यह नहीं है कि मशीन मनुष्य की जगह ले लेगी या नहीं, बल्कि यह है कि मनुष्य और मशीन किस प्रकार सह-अस्तित्व में रह सकते हैं। कविता जैसी विधा में मनुष्य की संवेदना और चेतना का स्थान कोई मशीन नहीं ले सकती। किंतु मशीन मनुष्य की रचनात्मक यात्रा में एक सहयात्री बन सकती है।

हिंदी कविता का भविष्य इस सह-अस्तित्व में निहित है, जहाँ परंपरा और तकनीक, संवेदना और संरचना, अनुभव और एल्गोरिद्म—सभी एक नए संवाद में शामिल हों।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी कविता का संबंध वर्तमान समय में एक संक्रमणशील और विचारोत्तेजक अवस्था में है। यह स्पष्ट हो चुका है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता न तो मानवीय रचनात्मकता का पूर्ण विकल्प बन सकती है और न ही वह साहित्य के अस्तित्व के लिए कोई प्रत्यक्ष खतरा है। कविता जैसी विधा, जो मानवीय संवेदना, अनुभूति, सामाजिक चेतना और आत्मसंघर्ष से उपजती है, उसमें मनुष्य की चेतना का स्थान कोई मशीन नहीं ले सकती। हालाँकि, यह भी उतना ही सत्य है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता साहित्यिक सृजन की प्रक्रिया को नए आयाम प्रदान कर सकती है। भाषा-विश्लेषण, शैली-अध्ययन, छंद-विन्यास और संपादन जैसे क्षेत्रों में एआई एक प्रभावी सहायक उपकरण सिद्ध हो सकती है। इससे कवि और शोधकर्ता दोनों को अपनी रचनात्मक और आलोचनात्मक क्षमताओं के विस्तार का अवसर मिलता है। हिंदी कविता के संदर्भ में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि यह हिंदी भाषा को डिजिटल युग में सशक्त बनाने का माध्यम बन सकती है। तकनीक के साथ संतुलित संवाद स्थापित करके हिंदी कविता अपनी परंपरा, संवेदना और सामाजिक सरोकारों को सुरक्षित रखते हुए नवाचार की ओर अग्रसर हो सकती है।

अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी कविता के बीच प्रतिस्पर्धा का नहीं, बल्कि सह-अस्तित्व और सहयोग का संबंध विकसित होना चाहिए। जब मानवीय संवेदना और तकनीकी दक्षता एक-दूसरे के पूरक बनेंगी, तभी हिंदी साहित्य का भविष्य अधिक समृद्ध, व्यापक और प्रासंगिक सिद्ध होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Frank, M., Roehrig, P., & Pring, B. (2014). *What to Do When Machines Do Everything*. John Wiley & Sons.
2. Hadas, E. (n.d.). *Computational Creativity and Poetry*. Blog article.
3. Oliveira, H. G. (2017). *Automatic Generation of Poetry: An Overview*. Portugal.
4. Zhang, X., & Lapata, M. (2014). Chinese poetry generation with recurrent neural networks. *Proceedings of EMNLP*.
5. Kyoto University. (2018). Beyond narrative description: Generating poetry from images by multi-adversarial training.
6. Singh, N. (2005). *कविता के नए प्रतिमान*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
7. Singh, B. (2010). *हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास*. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन.
8. AI Magazine. (n.d.). Articles on artificial intelligence and creativity.
9. MIT News. (n.d.). Reports on artificial intelligence, machine learning, and language technologies.
10. Popular Science Magazine. (n.d.). Articles on artificial intelligence and creative applications.
11. Chatbots Magazine. (n.d.). AI-based conversational systems and creative writing.
12. Benaj, B., &Kalita, J. (2013). Introducing aspects of creativity in automatic poetry generation.

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)